हफ़्तावार रिसाला : 198
Weekly Booklet : 198

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब
''मदनी पन्ज सूरह'' की एक क़िस्त

Kaam Ke Aurad (Hindi)

काम के अवराद

सफ़ह़ात : 20

- ज़ालिम और शैत़ान के शर से पनाह के लिय 05
- क़र्ज़ उतारने का वज़ीफ़ा 12
- सूरए फ़लक़ और सूरए नास के ५ फ़ज़ाइल 16

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

काम के अवराद

येह रिसाला **(काम के अवराद)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ژ	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ز
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = ای / ئ	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद–1, गुजरात

MO. **98987 32611** • E-mail :hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत की किताब ''मदनी पन्ज सूरह'' से लिया गया है।

काम के अवराद

दुआए अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 18 सफ़्हात का रिसाला : ''**काम के अवराद**'' पढ़ या सुन ले, उसे गुनाहों और फ़ुज़ूल कामों से बचा और उस को ज़िक्रो ना'त में मश्गूल रहने वाली ज़बान अ़ता फ़रमा और उस की बे हिसाब मग़्फ़िरत कर। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिसे पसन्द हो कि वोह **अल्लाह** पाक से इस ह़ाल में मुलाक़ात करे कि **अल्लाह** पाक उस से राज़ी हो तो उसे चाहिये कि वोह मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़े।

(افضل الصلوات علی سید السادات، ص27)

रह़मतुल लिल आ़लमीं हो, और शफ़ीउ़ल मुज़्निबीं हो
फ़ज़्ले रब से क्या नहीं हो, बा'द रब के बस तुम्हीं हो

يَانَبِي سَلَامٌ عَلَيْكَ يَا رَسُوْل سَلَامٌ عَلَيْكَ يَاحَبِيْب سَلَامٌ عَلَيْكَ صَلَوٰةُ اللّٰهِ عَلَيْكَ

(वसाइले बख़्शिश, स. 614)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

बुज़ुर्गों से मन्क़ूल 38 मदनी वज़ाइफ़

(1) डरावने ख़्वाबों से नजात

''يَامُتَكَبِّرُ'' 21 बार, अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद

शरीफ़ सोते वक़्त पढ़ लेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه डरावने ख़्वाब नहीं आएंगे।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब आदाबे त़आ़म, जि. 1/242)

(2) जानवर के काटे का अ़मल

येह आयते करीमा हर जानवर के काटे के लिये इक्सीर है, **ग्यारह बार** पढ़ कर काटने की जगह पर दम करे :

اَمْ اَبْرَمُوْۤا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ﴿۷۹﴾ (پ25، الزخرف:79)

(3) बराए दफ़्ए़ बवासीर ख़ूनी व बादी

हर क़िस्म की बवासीर ख़ूनी व बादी के लिये दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े पहली रक्अ़त में बा'द **अल ह़म्द** शरीफ़ के सूरए **अलम नश्रह़**, दूसरी में सूरए **फ़ील** और सलाम के बा'द सत्तर बार कहे :

''اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَیْهِ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ''

चन्द रोज़ इसी त़रह़ करे اِنْ شَآءَاللّٰه बवासीर दफ़्अ़ हो।

(4) फ़ालिज व लक़्वा

लक़्वा व फ़ालिज : **सूरए ज़िलज़ाल** लोहे (STEEL) के बरतन पर लिख कर धो कर पिलाई जाए।

दीगर तरकीब : **सूरए ज़िलज़ाल** लोहे (STEEL) के बरतन में लिख कर दें कि मरीज़ उस पर देखे اِنْ شَآءَاللّٰه सिह़्ह़त होगी।

(5) बराए क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से क़ब्ल ज़ैल में दी हुई दुआ (अव्वल आख़िर दुरूदे पाक) पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه जो कुछ पढ़ेंगे **याद** रहेगा :

''اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام''

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले! (المستطرف، 1/40)

(6) ज़ेह्न खोलने के लिये

हर रोज़ सबक़ से पहले इक्तालीस मर्तबा पढ़ कर सबक़ शुरूअ़ करें :

اِلٰهِیْ اَنْتَ اِلٰهٌ عَالِمٌ وَّاَنَا عَبْدُكَ جَاهِلٌ
اَسْئَلُكَ اَنْ تَرْزُقَنِیْ عِلْمًا نَّافِعًا وَّفَهْمًا كَامِلًا
وَّطَبْعًا زَكِیًّا وَّقَلْبًا صَفِیًّا حَتّٰی اَعْبُدَكَ وَلَا تُهْلِكْنِیْ
بِالْجَهَالَةِ بِرَحْمَتِكَ یَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ

(7) कोढ़ और पीलिया

सूरए बय्यिनह पढ़ कर **बरस व यरक़ान** (या'नी कोढ़ और पीलिया) वाले पर दम करें और लिख कर गले में डालें। खाने पर दोनों वक़्त येह सूरत सह़ीह़ ख़्वां (या'नी दुरुस्त पढ़ने वाले) से पढ़वा कर दम कर के खिलाएं ख़ुदा चाहे बहुत ज़ियादा फ़ाएदा हो।

(8) वुस्अ़ते रिज़्क़

"یَامُسَبِّبَ الْاَسْبَابِ" पांच सो बार अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ 11, 11 बार बा'द नमाज़े इ़शा क़िब्ला रू बा वुज़ू **नंगे सर** ऐसी जगह कि सर और आस्मान के दरमियान कोई चीज़ ह़ाइल न हो, यहां तक की सर पर टोपी भी न हो पढ़ा करें।

(9) तलाशे मआ़श

तलाशे मआ़श के लिये सूरए इख़्लास को बिस्मिल्लाह शरीफ़ के साथ एक हज़ार एक बार, अव्वल व आख़िर सो सो मर्तबा दुरूद शरीफ़, उ़रूजे माह (या'नी चांद की पहली से चौदहवीं तक के ज़माने) में पढ़ना निहायत मुअस्सिर है।

(10) कभी मोह़ताज न हो

जो शख़्स हर रात में सूरए वाक़िआ़ पढ़ेगा उस को कभी **फ़ाक़ा** न होगा। اِنْ شَآءَاللہ (مشکاۃ،1/409،حدیث:2181)

ह़ज़रते ख़्वाजा कलीमुल्लाह साह़िब رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि अदाए क़र्ज़ और फ़ाक़ा दूर करने के लिये इस को बा'दे मग़रिब पढ़ो।

(जन्नती ज़ेवर, स. 597)

(11) चोरी से मह़फ़ूज़ रहे

सूरए तौबा को अपने अस्बाब (या'नी सामान) में रखे اِنْ شَآءَاللہ चोरी से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(12) गुमशुदा शै के मिलने का अ़मल

चालीस बार सूरए **यासीन** शरीफ़ सात दिन तक पढ़े।

(13) बराए क़ज़ाए ह़ाजात

ह़दीस शरीफ़ में है ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि मुझे एक ऐसी आयत मा'लूम है कि अगर लोग उस पर अ़ामिल हों तो उन की ह़ाजतों को काफ़ी है फिर येह आयते करीमा इर्शाद फ़रमाई। (अदाए क़र्ज़ और रोज़ी व रोज़गार के लिये इस की कसरत मुफ़ीद व मुजर्रब है।)

﴿وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَیْءٍ قَدْرًا ﴿۳﴾﴾ (پ28، الطلاق:2، 3)

(14) हर ह़ाजत व मुराद पूरी होगी

हज़ार बार "يَا شَيْخ عَبْدَ الْقَادِر شَيْئًا لِلّٰهِ" पढ़े अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ 10, 10 बार पढ़ कर दाहिने हाथ पर दम कर के ज़ेरे कल्ला (रुख़्सार के नीचे) रख कर सो जाए हर ह़ाजत व मुराद पूरी होगी। اِنْ شَآءَاللہ

(15) बर्फ़ बारी रोकने के लिये

लोहे के तवे पर सियाही की त़रफ़ (या'नी तवे की उलटी त़रफ़) इस दुआ़ को उंगली से लिख कर आस्मान के नीचे रखे اِنْ شَآءَاللّٰه बर्फ़ बारी बन्द हो जाएगी : يَاحَافِظُ يَاخَافِضُ

(16) ग़ाइब या भागे हुए शख़्स को बुलाने के लिये

किसी बुज़ुर्ग के मज़ार के पास और येह मुम्किन न हो तो मकान के गोशे में बैठ कर आयत : ﴿وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۝ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ۝﴾ (پ ٣٠ الضحٰی:٧،٨) नव सो नव्वे बार पढ़े फिर एक बार पूरी सूरए **वद्दुहा** पढ़ कर दुआ़ करे اِنْ شَآءَاللّٰه वोह वापस आ जाएगा।

बा'द नमाज़े इशा इक्तालीस बार सूरए **वद्दुहा** मअ़ बिस्मिल्लाह शरीफ़ के पढ़ कर खड़े हो कर मकान के दो गोशों में अज़ान और दो गोशों में तक्बीर कह कर वापसी के लिये दुआ़ करे एक हफ़्ते के अन्दर اِنْ شَآءَاللّٰه वापस आ जाएगा।

(17) ज़ह्‌र का असर न हो

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَيْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَهُوَالسَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

हमेशा येह दुआ़ पढ़ कर खाना खाएं और पानी वग़ैरा पियें तो اِنْ شَآءَاللّٰه **जह्‌र** का असर दूर हो जाएगा और ज़ह्‌र कोई नुक़्सान नहीं देगा।

(जन्नती ज़ेवर, स. 579)

(18) बुख़ार से शिफ़ा

जिस को बुख़ार हो सात बार येह दुआ़ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ عِرْقٍ نَّعَّارٍ وَّ مِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ

(مستدرک حاکم، 5/592، حدیث:8324)

अगर मरीज़ ख़ुद न पढ़ सके तो कोई दूसरा नमाज़ी आदमी सात बार पढ़ कर दम कर दे या पानी पर दम कर के पिला दे اِنْ شَآءَاللّٰه बुख़ार

उतर जाएगा। एक मर्तबा में **बुख़ार** न उतरे तो बार बार येह अ़मल करें।

(जन्नती ज़ेवर, स. 580 बि तग़य्युर)

(19) *ज़ालिम और शैतान के शर से पनाह के लिये*

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने एक मक्तूब में लिखते हैं : इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه "जम्उ़ल जवामेअ़" में मुह़द्दिस अबुश्शैख़ की किताबुस्सवाब और तारीख़े इब्ने अ़साकिर से नक़्ल करते हैं कि एक रोज़ ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी ज़ालिम गवर्नर ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه को मुख़्तलिफ़ अक़्साम के 400 **घोड़े** दिखा कर कहा कि ऐ अनस ! क्या तुम ने अपने साह़िब (या'नी **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के पास भी इतने घोड़े और येह शानो शौकत देखी है ? ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास इस से बेहतर चीज़ें देखी हैं और मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है कि घोड़े तीन त़रह़ के हैं, एक वोह घोड़ा जो **जिहाद** के लिये रखा जाए फिर उस के रखने का सवाब बयान फ़रमाया (येह आ़म तौ़र पर ह़दीस की किताबों में मौजूद है) दूसरा वोह घोड़ा जो **अपनी सुवारी** के लिये रखा जाता है, तीसरा वोह घोड़ा जो **नाम व नुमूद** के लिये रखा जाता है इस के रखने से आदमी जहन्नम में जाएगा। ऐ ह़ज्जाज ! तेरे घोड़े ऐसे ही हैं। ह़ज्जाज येह सुन कर आग बगूला हो गया और कहा कि ऐ अनस ! अगर मुझ को इस का लिह़ाज़ न होता कि तुम ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत की है और अमीरुल मुअमिनीन (अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान) ने तुम्हारे साथ रिआ़यत करने की हिदायत की है तो मैं तुम्हारे साथ बहुत बुरा मुआ़मला कर डालता। **ह़ज़रते अनस** رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : ऐ ह़ज्जाज ! ख़ुदा की क़सम ! तू मेरे साथ कोई बद

उ़न्वानी नहीं कर सकता मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से चन्द कलिमात सुने हैं जिन की बरकत से मैं हमेशा **अल्लाह** पाक की पनाह में रहता हूं और इन कलिमात की बदौलत किसी ज़ालिम की सख़्ती और किसी शैत़ान के शर से डरता ही नहीं, ह़ज्जाज इस कलाम की हैबत से दम बख़ुद रह गया और सर झुका लिया, थोड़ी देर के बा'द सर उठा कर बोला कि ऐ अबू ह़म्ज़ा ! (येह ह़ज़रते अनस की कुन्यत है) येह कलिमात मुझे बता दीजिये। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया कि मैं हरगिज़ तुझे न बताऊंगा इस लिये कि तू इस का अहल नहीं है। रावी का बयान है कि जब ह़ज़रते **अनस** رَضِیَ اللهُ عَنْه का आख़िरी वक़्त आ गया तो उन के ख़ादिम ह़ज़रते **अबान** رَضِیَ اللهُ عَنْه उन के सिरहाने आ कर रोने लगे, ह़ज़रते **अनस** رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : क्या चाहता है ? ह़ज़रते **अबान** رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : वोह कलिमात हमें ता'लीम फ़रमाइये जिन के बताने की ह़ज्जाज ने दरख़्वास्त की थी और आप ने इन्कार फ़रमा दिया था। ह़ज़रते **अनस** رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : लो सीख लो इन को सुब्ह़ व शाम पढ़ना। वोह कलिमात येह हैं :

दुआ़ए अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه

بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى نَفْسِىْ وَدِيْنِىْ بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى اَهْلِىْ وَمَالِىْ وَوَلَدِىْ بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى مَااَعْطَانِىَ اللّٰهُ اَللّٰهُ رَبِّىْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَاَعَزُّ وَاَجَلُّ وَاَعْظَمُ مِمَّا اَخَافُ وَاَحْذَرُ عَزَّ جَارُكَ وَجَلَّ ثَنَآؤُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ ط اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِىْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّرِيْدٍ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِىَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اِنَّ وَلِيِّ اللّٰهُ الَّذِىْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ

इस दुआ़ को तीन मर्तबा सुब्ह़ को और तीन मर्तबा शाम को पढ़ना बुज़ुर्गों का मा'मूल है। (जन्नती ज़ेवर, स. 584, अख़्बारुल अख़्यार, स. 291)

सुब्ह़ व शाम की ता'रीफ़ : आधी रात के बा'द से ले कर सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह़ (इस सारे वक़्फ़े में जो कुछ पढ़ा जाए उसे सुब्ह़ में पढ़ना कहेंगे) और इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर से गुरूबे आफ़्ताब तक शाम कहलाती है। (इस सारे वक़्फ़े में जो कुछ पढ़ा जाए उसे शाम में पढ़ना कहेंगे)

(20) कुव्वते ह़ाफ़िज़ा के लिये

पांचों नमाज़ों के बा'द सर पर दाहिना हाथ रख कर ग्यारह मर्तबा يَاقَوِيُّ पढ़ें। (जन्नती ज़ेवर, स. 605)

(21) बीनाई की ह़िफ़ाज़त के लिये

पांचों नमाज़ों के बा'द ग्यारह मर्तबा "يَانُوْرُ" पढ़ कर दोनों हाथों के पोरों पर दम कर के आंखों पर फेर लीजिये। (जन्नती ज़ेवर,स. 606)

(22) ज़बान में लुक्नत

फ़ज्र की नमाज़ पढ़ कर एक पाक कंकरी मुंह में रख कर येह आयत इक्कीस मर्तबा पढ़िये : (जन्नती ज़ेवर,स. 606)

﴿رَبِّ اشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ ۙ﴿۲۵﴾ وَ یَسِّرْ لِیْۤ اَمْرِیْ ۙ﴿۲۶﴾ وَ احْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِیْ ۙ﴿۲۷﴾ یَفْقَهُوْا قَوْلِیْ ﴿۪۲۸﴾﴾

(پ16، طٰہٰ:25-28)

(23) पेट के दर्द के लिये

येह आयत पानी वग़ैरा पर तीन बार पढ़ कर पिला दीजिये या लिख कर पेट पर बांध दीजिये : (जन्नती ज़ेवर,स. 606)

﴿لَا فِیْهَا غَوْلٌ وَّ لَا هُمْ عَنْهَا یُنْزَفُوْنَ ﴿۴۷﴾﴾(پ23، الصّٰفّٰت:47)

(24) तिल्ली बढ़ जाना

इस आयत को लिख कर तिल्ली की जगह बांधें :

﴿بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○ ذٰلِكَ تَخْفِیْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ رَحْمَةٌ ؕ﴾(پ2، البقرة:178)

(25) नाफ़ उतर जाना

(अलिफ़) इस आयत को लिख कर नाफ़ की जगह बांधिये : (जन्नती ज़ेवर,स. 606)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۱﴾ (پ22، فاطر:41)

(बा) **ता हुसूले** शिफ़ा रोज़ाना एक बार नाफ़ पर हाथ रख कर अव्वल आख़िर एक मर्तबा दुरूद शरीफ़ के साथ ज़ैल की आयात सात बार पढ़ कर दम कीजिये । (येह अ़मल सगे मदीना का मुजर्रब है)

﴿هُوَ الَّذِیْۤ اَنْزَلَ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰیٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ الْكِتٰبِ وَ اُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ فَاَمَّا الَّذِیْنَ فِیْ قُلُوْبِهِمْ زَیْغٌ فَیَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَ ابْتِغَآءَ تَاْوِیْلِهٖ ۚ وَ مَا یَعْلَمُ تَاْوِیْلَهٗۤ اِلَّا اللّٰهُ ۘ وَ الرّٰسِخُوْنَ فِی الْعِلْمِ یَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَ مَا یَذَّكَّرُ اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَیْتَنَا وَ هَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝﴾

(پ3، اٰلِ عمران:7،8)

(26) बुख़ार

(अलिफ़) अगर बिग़ैर जाड़े के हो तो येह आयत लिख कर गले में बांधिये और इसी को पढ़ कर दम कीजिये । (जन्नती ज़ेवर,स. 606)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْنَا یٰنَارُ كُوْنِیْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰۤى اِبْرٰهِیْمَ ﴿۶۹﴾ (پ17، الانبیاء:69)

(बा) अगर बुख़ार जाड़े के साथ हो तो येह आयत लिख कर गले में बांधे ।

(जन्नती ज़ेवर,स. 606)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَ مُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۴۱﴾ (پ12، ہود:41)

(27) फोड़ा फुन्सी

पाक साफ़ ढेला पीस कर उस पर येह दुआ तीन मर्तबा पढ़ कर थूके और उस मिट्टी पर थोड़ा पानी छिड़क कर वोह मिट्टी तक्लीफ़ की जगह पर दिन में दो चार बार मल लिया करे चाहे फोड़े पर येह मिट्टी लगा कर पट्टी बांध दे। (जन्नती ज़ेवर,स. 607)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ۙ﴿۱۵﴾ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ۚ﴿۱۶﴾ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿۱۷﴾

(پ30، الطارق:15-17)

(28) पागल कुत्ते का काट लेना

ऊपर ज़िक्र की हुई आयत को रोटी या बिस्कुट के चालीस टुकड़ों पर लिख कर एक टुकड़ा रोज़ उस शख़्स को खिला दें, اِنْ شَآءَاللّٰه उस शख़्स को बावला पन और हड़क न होगी। (जन्नती ज़ेवर,स. 607)

(29) बांझ पन

चालीस लौंगें ले कर हर एक पर सात सात बार इस आयत को पढ़े और जिस दिन औरत हैज़ से पाक हो कर ग़ुस्ल करे उस दिन से एक **लौंग** रोज़ मर्रा सोते वक़्त खाना शुरूअ़ करे और उस पर पानी न पीवे और इस दरमियान में ज़रूर शौहर के साथ तख़्लिया करे। आयत येह है।

(जन्नती ज़ेवर,स. 607)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَاۤ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿۴۰﴾ (پ18، النور:40)

اِنْ شَآءَاللّٰه औलाद मिलेगी।

(30) अगर पेट में बच्चा टेढा हो गया तो

सूरए इन्शिक़ाक़ की इब्तिदाई पांच आयात तीन बार पढ़े। (अव्वल व आख़िर तीन मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़े) आयतों के शुरूअ़ में हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ ले। पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले। रोजाना येह अ़मल करती रहे। वक़्तन फ़ वक़्तन इन आयात का विर्द करती रहे। दूसरा कोई भी दम कर के दे सकता है। اِنْ شَآءَاللّٰه बच्चा सीधा हो जाएगा दर्दे ज़ेह के लिये भी येह अ़मल मुफ़ीद है।

(31) हैज़ा

हर खाने पीने की चीज़ पर सूरए क़द्र पढ़ कर दम कर लिया करें اِنْ شَآءَاللّٰه हिफ़ाज़त रहेगी और जिस को मरज़ हो जाए उस को भी किसी चीज़ पर दम कर के खिलाएं पिलाएं اِنْ شَآءَاللّٰه शिफ़ा हासिल होगी।

(जन्नती ज़ेवर,स. 609)

(32) क़ै, दर्द, दर्दे शिकम के लिये

इस आयते करीमा को लिख कर पिलाएं :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَوَ لَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿۷۷﴾

(پ23، یٰس:77)

(33) दर्दे आ'ज़ा के लिये

नमाज़ के बा'द सात बार येह आयते करीमा :

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَ تِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱﴾ (پ28، الحشر:21)

पढ़ कर दोनों हाथों पर दम कर के दर्द की जगह पर मले दर्द जाता रहेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه

(34) एहतिलाम से हिफ़ाज़त

एहतिलाम से बचने के लिये सूरए नूह सोते वक़्त एक बार पढ़ कर अपने ऊपर दम करें।

(35) आंखें कभी न दुखें

مَرْحَبًا بِحَبِيْبِيْ وَقُرَّةُ عَيْنِيْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِاللّٰه

हज़रते इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है, जो शख़्स मुअज़्ज़िन को "اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه" कहता सुन कर येह कहे और अपने अंगूठे चूम कर आंखों से लगाए तो न कभी वोह अन्धा होगा न ही कभी उस की आंखें दुखेंगी। (المقاصد الحسنہ، ص391)

(35) घर में मदनी माहोल बनाने का नुस्ख़ा

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿۷۴﴾

(پ19، الفرقان:74)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेशवा बना।

हर नमाज़ के बा'द येह दुआ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लें। اِنْ شَآءَاللّٰه बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे और घर में मदनी माहोल क़ाइम होगा। (मसाइलुल कुरआन, स. 290)

(37) शूगर का इलाज

رَبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿۸۰﴾

(پ15، بنی اسرائیل:80)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब मुझे सच्ची त़रह़ दाख़िल कर और सच्ची त़रह़ बाहर ले जा और मुझे अपनी त़रफ़ से मददगार ग़लबा दे।

येह क़ुरआनी दुआ रोज़ाना सुब्ह़ व शाम तीन तीन बार (अव्वल व आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पियें।

(मुद्दते इ़लाज : ता हुसूले शिफ़ा)

(38) क़र्ज़ा उतारने का वज़ीफ़ा

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

तरजमा : "**या अल्लाह** मुझे ह़लाल रिज़्क़ अ़ता फ़रमा कर ह़राम से बचा और अपने फ़ज़्लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे।" ता ह़ुसूले मुराद हर नमाज़ के बा'द 11, 11 बार और सुब्ह़ व शाम सो सो बार रोज़ाना (अव्वल व आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़िये।

मरवी ह़ुवा कि एक मुकातब (मुकातब उस ग़ुलाम को कहते हैं जिस ने अपने आक़ा से माल की अदाएगी के बदले आज़ादी का मुआ़हदा किया ह़ुवा हो। (مختصر القدوری، ص171) ने ह़ज़रते **मुश्किल कुशा**, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की बारगाह में अ़र्ज़ की : मैं अपनी किताबत (या'नी आज़ादी की क़ीमत) अदा करने से आ़जिज़ हूं मेरी मदद फ़रमाइये। आप ने फ़रमाया : मैं तुम्हें चन्द कलिमात न सिखाऊं जो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे सिखाए हैं, अगर तुम पर जबले सैर (सैर एक पहाड़ का नाम है। (النہایۃ، 61/3) जितना दैन (या'नी क़र्ज़) होगा तो **अल्लाह** पाक तुम्हारी त़रफ़ से अदा कर देगा तुम यूं कहा करो :

"اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ"

(ترمذی، 329/5، حدیث:3574)

"बरी" के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से सूरए काफ़िरून के 3 फ़ज़ाइल

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रवह बिन नौफ़ल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है उन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** ! صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे ऐसी चीज़ बताएं जिसे मैं

बिस्तर पर जाते वक़्त पढ़ा करूं नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ'' (पूरी सूरत) पढ़ा करो, येह शिर्क से **बराअत** (या'नी आज़ादी) है। (ترمذی، 5/257، حدیث:3414)

(2) ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से फ़रमाया : ''ऐ फ़ुलां ! क्या तुम ने शादी कर ली है ?'' तो उस ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** ! صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुदा की क़सम ! नहीं की, मेरे पास शादी करने के लिये कुछ नहीं।'' फ़रमाया : ''क्या तुम्हें ''قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ'' याद नहीं ?'' उस ने अ़र्ज़ की ''क्यूं नहीं।'' आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''येह **तिहाई क़ुरआन** के बराबर है।'' फिर फ़रमाया : ''क्या तुम्हें ''اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ'' याद नहीं ?'' उस ने अ़र्ज़ की क्यूं नहीं। फ़रमाया : ''येह **चौथाई क़ुरआन** के बराबर है।'' फिर दर्याफ़्त फ़रमाया : ''क्या तुम्हें ''قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ'' याद नहीं ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''क्यूं नहीं।'' फ़रमाया : ''येह **चौथाई क़ुरआन** के बराबर है।'' फिर फ़रमाया : ''क्या तुझे ''اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ'' याद नहीं ?'' उस ने अ़र्ज़ की : ''क्यूं नहीं ?'' फ़रमाया : ''येह ''**चौथाई क़ुरआन** है'' फिर फ़रमाया : ''शादी कर लो'', शादी कर लो।''

(ترمذی، 4/409، حدیث:2904)

(3) ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''اِذَا زُلْزِلَتِ'' निस्फ़ क़ुरआन के बराबर है और ''قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ'' **तिहाई क़ुरआन** के बराबर है और ''قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ'' **चौथाई क़ुरआन** के बराबर है।''

(ترمذی، 4/409، حدیث:2903)

“बिस्मिल्लाह” के सात हुरूफ़ की निस्बत से सूरतुल इख़्लास के 7 फ़ज़ाइल

(1) **हज़रते** अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : “तुम में से कोई शख़्स रात में **तिहाई कुरआन** क्यूं नहीं पढ़ता ?” सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم ने अर्ज़ किया : कोई शख़्स **तिहाई कुरआन** कैसे पढ़ सकता है ? इर्शाद फ़रमाया : “قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ” **तिहाई कुरआन** के बराबर है।

(مسلم، حدیث:1886، ص315)

(2) **हज़रते** अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि **सय्यिदुल मुरसलीन** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : “इकठ्ठे हो जाओ क्यूं कि अभी मैं तुम्हारे सामने **तिहाई कुरआन** पढूंगा।” चुनान्चे सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم में से जिन्हें जम्अ़ होना था वोह जम्अ़ हो गए फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और “قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ” पढ़ी और वापस तशरीफ़ ले गए। हम एक दूसरे से कहने लगे : “शायद आस्मान से कोई ख़बर आई है जिस की वज्ह से हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ले गए हैं।” जब आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दोबारा तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया : “मैं ने तुम्हारे सामने **तिहाई कुरआन** पढ़ने का कहा था तो सुन लो ? येही सूरत **तिहाई कुरआन** के बराबर है।” (مسلم، ص316، حدیث: 1888)

(3) **हज़रते** अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि “एक शख़्स ने किसी को बार बार “قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ” पढ़ते हुए सुना तो सुब्ह के वक़्त रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर इस का तज़्किरा किया वोह साहिब गोया उसे कम समझ रहे थे तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ने फ़रमाया : ''उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते कुदरत में मेरी जान है येह सूरत **तिहाई कुरआन** के बराबर है।'' (بخاری، حدیث:5013، 3/406)

(4) हज़रते मुआज़ बिन अनस जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह के महबूब** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स दस मर्तबा ''قُلْ ہُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ'' पढ़ेगा **अल्लाह** पाक उस के लिये जन्नत में एक **महल** बनाएगा।'' हज़रते उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने अर्ज़ किया : **''या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फिर तो हम इसे कसरत से पढ़ा करेंगे।'' आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''**अल्लाह** पाक बहुत ज़ियादा अता फ़रमाने वाला और पाक है।'' (مسند امام احمد، 5/308، حدیث:15610)

(5) उम्मुल मुअमिनीन हज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से मरवी है कि नूर के पैकर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक साहिब को एक सरिय्या[1] का अमीर बना कर भेजा येह अपने अस्हाब को नमाज़ पढ़ाते तो उस में और सूरत के साथ अख़ीर में ''قُلْ ہُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ'' पढ़ते। सरिय्या से लौटने के बा'द लोगों ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस का तज़्किरा किया तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''उस से पूछो वोह ऐसा क्यूं करता है ?'' लोगों ने उस से पूछा तो उस ने बताया कि ''मैं इस को हर नमाज़ में इस लिये पढ़ता हूं कि येह रहमान की सिफ़त है और मैं इस के पढ़ने को पसन्द करता हूं।'' येह सुन कर नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''उस को ख़बर दो कि **अल्लाह** पाक भी उस से **महब्बत** फ़रमाता है।'' (بخاری، 4/531، حدیث:7375)

---

❶...... सरिय्या वोह छोटा लशकर है जिस की ता'दाद चार सौ तक हो जो दुशमन की तरफ़ भेजा जाए। मुहद्दिसीन की इस्तलाह में सरिय्या वोह लश्कर है जिस में हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ न ले जाएं। (مرقاۃ، 7/410، تحت الحدیث:3849)

(6) हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ख़ातिमुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ कहीं जा रहा था कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी शख़्स को सूरए इख़्लास पढ़ते हुए सुना तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "वाजिब हो गई ।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या चीज़ वाजिब हो गई ?" फ़रमाया : "जन्नत ।"

(موطاامام مالک، 1/198، حدیث:495)

(7) हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स रोज़ाना दो सो मर्तबा "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝" पढ़ेगा उस के **पचास बरस** के गुनाह मिटा दिये जाएंगे मगर येह कि उस पर क़र्ज़ हो ।" (या'नी क़र्ज़ मुआ़फ़ नहीं होगा ।)

(ترمذی، 4/411، حدیث:2907)

"क़ुल क़ुल" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से सूरए फ़लक़ और सूरए नास के 5 फ़ज़ाइल

(1) हज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : "ऐ जाबिर ! पढ़ो ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह !** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! क्या पढ़ूं ?" फ़रमाया : "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝" और "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝" फिर मैं ने येह दोनों (सूरतें) पढ़ीं तो फ़रमाया : "इन दोनों को पढ़ा करो क्यूं कि तुम इन की **मिस्ल** हरगिज़ न पढ़ सकोगे ।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، 2/84، حدیث: 793)

(2) ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि "मैं एक सफ़र में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ उ़क़्बा ! क्या मैं तुम्हें पढ़ी जाने वाली दो **बेहतरीन सूरतें**

न सिखाऊं ?" फिर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ" और "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ" सिखाई।" (ابوداود، 2/103، حدیث:1462)

(3) हज़रते उक़्बा बिन आमिर رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि "मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जुहफ़ा और अब्वा (दो मक़ामात) के दरमियान से गुज़र रहा था कि हमें शदीद आंधी और तारीकी ने घेर लिया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ" और "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ" के ज़रीए पनाह मांगना शुरूअ़ की और मुझ से फ़रमाया : "ऐ उक़्बा ! इन दोनों के ज़रीए **पनाह** मांगा करो किसी **पनाह** चाहने वाले ने इस की मिस्ल किसी चीज़ के वसीले से पनाह नहीं मांगी।"

(ابوداود، 2/104، حدیث:1463)

(4) उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते बीबी आइशा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमाने के लिये बिस्तर पर तशरीफ़ लाते तो दोनों हाथों को जोड़ कर सूरए इख़्लास, फ़लक़ और नास पढ़ कर दम करते और बदने अक़्दस के जिस हिस्से तक हाथ पहुंचते वहां हाथ फेरते मगर हाथ फेरने की इब्तिदा सर और चेहरे से होती और जिस्मे अक़्दस के अगले हिस्से से और इसी त़रह़ तीन मर्तबा येह अ़मल करते थे।

(بخاری، 3/407، حدیث:5017)

(5) हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़बीब رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी है कि सरकारे दो आ़लम नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया "قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ" और **मुअ़व्विज़तैन** (या'नी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) रोज़ाना तीन तीन मर्तबा सुब्ह़ व शाम पढ़ लिया करो येह तुम्हारे लिये हर चीज़ से **किफ़ायत** करेंगी। (تفسیر درمنثور، پ30، البقرۃ، تحت الآیۃ:1، 8/681)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

978-969-722-052-6
01082196

فیضانِ مدینہ محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net